बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – पंचम् **दिनांक 01-09-2020**

विषय – हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज नीति के दोहे (कविता) के अन्तर्गत कबीर दास जी के दोहे का अपने शब्दों में अर्थ स्पष्ट करेंगे।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काको लागूं पायं।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय।।

इस सूत्र के दो अर्थ हो सकते हैं-
पहला अर्थ-'बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय।' तो कबीर कहते हैं कि बलिहारी गुरु तुम्हारी कि जब मैं दुविधा में था, तुमने तत्क्षण इशारा कर दिया कि गोविन्द के पैर छुओ। 'बलिहारी गुरु जिन गोविन्द दियो बताय।' जैसे ही मैं दुविधा में था आपने इशारा कर दिया कि गोविन्द के पैर छुओ, क्योंकि मैं तो यहाँ तक था। मैं तो राह पर लगे हुए मील के पत्थर की तरह था, जिसका इशारा थाः आ गया, मंजिल आ गई। अब मेरा कोई काम नहीं। अब तुम गुरु को छोड़ो, गोविन्द के पैर छू लो।

दूसरा अर्थ है-'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काको लागूं पायं। बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय।।' दुविधा में हूँ, किसके पैर लगूं। गुरु गोविन्द दोनो खड़े हैं। फिर मैंने गोविन्द को छोड़ा, गुरु के ही पैर छुए ; क्योंकि उसकी ही बलिहारी है, उसी ने गोविन्द को बताया है।

माखी गुड में गडी रहे, पंख रहे लिपटाए ।
हाथ मेल और सर धुनें, लालच बुरी बलाय ।

भावार्थ: कबीर दास जी कहते हैं कि मक्खी पहले तो गुड़ से लिपटी रहती है। अपने सारे पंख और मुंह गुड़ से चिपका लेती है लेकिन जब उड़ने प्रयास करती है तो उड़ नहीं पाती तब उसे अफ़सोस होता है। ठीक वैसे ही इंसान भी सांसारिक सुखों में लिपटा रहता है और अंत समय में अफ़सोस होता है।

गृहकार्य

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में दें।

(1) कबीर दास किसको ढूँढ़ने के लिए निकल?
(2) कबीर दास के अनुसार सबसे बड़ा तप क्या है?
(3) कबीर ने गुरू को ईश्वर से अधिक महत्वपूर्ण क्यों बताया है?